शैतान के मक़ासिद 95

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफें अल्लाहतआला के लिए हैं। जो सारे जहान का पालन हार हैं हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं।

अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर।

व बअद!

वह जिसे आग से पैदा किया गया। वह जिसने आदम (अलैहि0) को सज्दा करने से इन्कार किया। वह जिसकी वजह से मां हव्वा और आदम (अलैहि0) को जन्नत से निकाला गया। वह जो आदम व औलादे आदम (अलैहि0) का खुला दुश्मन है वह जो चाहता है कि इन्सान जन्नत से दूर हो और जहन्नम का ईंधन बने। वह जिसकी कोशिशें है कि इन्सान उसकी टेढ़ी राह को अपनाएं और अल्लाह की सीधी राह पर न चले। वह जिसका कहा मान कर इन्सान अल्लाह को नाराज़ करता है, वो जिसका नाम 'अज़ाज़ील' है। मगर उर्फे आम में वह 'इबलीस' व 'शैतान' कहलाता है।

शैतान का बुनियादी मक़सद तो यही एक है कि इन्सान को जहन्नम में धकेल दे और जन्नत से मेहरूम कर दे। इसी एक मक़सद की खातिर उसकी सारी कोशिशें हैं।' जैसा कि इर्शादे बारी तआला है "वह तो अपने पैरोकारों को अपनी राह पर इसलिए बुला रहा है कि वोह जहन्नमियों में शामिल हो जाएं।" **(फ़ातिर–आयत–6)** इसी बुनियादी मक़सद में कामयाब होने के लिए वह क्या–क्या करता है? और उसके शर कैसे बचा जा सकता है। आईये! इस फोल्डर से वही जानने की कोशिश करते हैं।

(1) इनसान को कुफ्र व शिर्क में मुब्तिला करना–

इसके लिए शैतान इन्सान को गैरुल्लाह की इबादत और अल्लाह व उसकी शरीअत से इन्कार की दअवत देता है। "पहले वह इन्सान से कहता है कि कुफ्र कर और जब इन्सान कुफ्र कर बैठता है तो वह कहता है कि मैं तुझसे अलग हूँ, मेरा तुझसे कोई तअल्लुक नहीं" **(हश्र–आयत–16)** एक दिन अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है कि मैं तुम्हे वह बात बताऊं जिसे तुम नहीं जानते और वह बात मुझे अल्लाह ने आज ही बतलाई है। वह यह कि अल्लाह ने जो कुछ अपने बन्दे को अता किया, वह उसके लिए हलाल है और अल्लाह ने सारे इन्सानों को 'दीने हनीफ़' पर पैदा किया था। लैकिन शैतान ने उन्हें अपने दीन से फेर दिया और अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को शरीक ठहराया, जिसके लिए अल्लाह ने कोई दलील नाज़िल नहीं की।" **(मुस्लिम–)**

(2) गुनाहों में मुब्तिला करना– रसूल सल्ल0 ने फरमाया

(1) "लोगों सुनो! शैतान इस बात से कतई ना उम्मीद हो चुका है कि इस शहर में उसकी इबादत होगी। मगर कुछ आमाल जिन्हें तुम मामूली समझते हो, उनमें उसकी इताअत की जाएगी और वह उसी से खुश होगा।" **(इब्ने माजा– –तिर्मिज़ी–)**

(2) "शैतान इस बात से ना उम्मीद है कि जज़ीरा ए अरब में नमाज़ पढ़ने वाले उसकी इबादत करेंगे। लेकिन उन्हें एक दूसरे के खिलाफ़ भड़काने व लड़ाने

में वह ना उम्मीद नहीं।" (बुख़ारी–) जैसा कि इर्शादे बारी है–
(1) शैतान चाहता है कि शराब व जुए के ज़रिये तुम्हारे बीच बुग़ज़ व दुश्मनी डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे।" **(माइदा–आयत–91)**
(2) वह (शैतान) तुम्हें बे हयाई व बुराई का हुक्म देता है और यह सिखाता है कि तुम अल्लाह के नाम पर वोह बातें कहो, जिनका तुम्हें इल्म नहीं है।" **(बक़राह–आयत–169)**
(यानि हर वह काम जो अल्लाह को पसन्द हैं, शैतान उन्हें ना पसन्द करता है और हर गुनाह व ना फ़रमानी के काम को जिन्हें अल्लाह पसन्द नहीं करता, शैतान उन बातों (कामों) को पसन्द करता है।)
(3) बिदआत में मुलव्वस करना–शैतान जब किसी इन्सान को कुफ़्र व शिर्क और बड़े गुनाहों में मुलव्वस नहीं कर पाता तो उसे बिदआत पर लगा देता है। जबकि इर्शादे बारी है "ऐ ईमान वालो! अल्लाह से और उसके रसूल (सल्ल0) से आगे न बढ़ो" **(हुजरात–आयत–01)** अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि (1) दीन के नाम पर ईजाद की गई हर नई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है।" **(मुस्लिम–1471 – इब्ने माजा–45)**
(2) "अल्लाह तआला बिदअती की तौबा कुबूल नहीं करता, जब तक कि वह बिदअत को न छोड़ दे।" **(तबरानी–052)**
(3) "अल्लाह तआला बिदअती का कोई अमल कुबूल नहीं करता , यहां तक कि वह अपनी बिदअत छोड़ दे।" **(इब्ने माजा–50)**
(4) इन्सान को अल्लाह की इताअत से रोकना–
नेकी व भलाई के जिस रास्ते पर भी अल्लाह का कोई बन्दा चलना चाहता है। शैतान उसकी राह में रोड़े अटकाता है और उसे रोकने की कोशिश करता है। इसलिए कि शैतान ने अल्लाह से कहा था "जिस तरह मैं गुमराही में पड़ा। मै भी तेरी सीधी राह पर (तेरे बन्दों को गुमराह करने के लिए) बैठूंगा फिर इन्सानों को आगे से, पीछे से, दाएं से, बाएं से ग़रज़ हर तरफ़ से घेरूंगा और तू उनमें से ज़्यादातर को शुक्र गुज़ार न पाएगा।" **(आराफ़–आयत–16–17)**
(5) इबादत व इताअत में ख़राबी पैदा करना–
एक सहाबी रसूल सल्ल0 के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि नमाज़ ख़राब करने के लिए शैतान मेरे और नमाज़ के बीच हायल हो जाता है। आप सल्ल0 ने फ़रमाया "यह शैतान है, जिसे 'ख़न्ज़ब' कहा जाता है। अगर तुम्हें उसका एहसास हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगों और बाईं तरफ़ तीन दफ़ा थूक दो। " वह सहाबी कहते हैं कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह ने यह चीज ख़त्म कर दी। **(मुस्लिम– 5738)**

"जब शैतान अज़ान को सुनता है तो पाद मारता हुआ भागता है। अज़ान (ख़त्म) हो जाने पर वह वापिस आ जाता है और वसवसा पैदा करना शुरू कर देता है। फिर अक़ामत की आवाज़ सुनता है तो भाग जाता है, फिर अक़ामत हो जाने पर वापिस आकर वसवसा पैदा करना शुरू कर देता है।" **(बुख़ारी– 608 मुस्लिम–856)**

"जब अक़ामत ख़त्म होती है तो शैतान आता है और इन्सान और उसके दिल के बीच हायल हो कर कहता है कि फलां बात याद करो, फलां चीज़ याद करो। यानि उसे वोह बातें याद दिलाता है, जो उसे पहले याद न थी। इस वजह से इन्सान को याद नहीं रहता कि उसने कितनी रकअतें

पढ़ी हैं।"(मुसिलम–859 बुख़ारी–1231)

जिस्मानी व ज़हनी तौर पर तक्लीफ़ देना–

(1) पैदाइश के वक़्त – रसूल सल्ल0 फ़रमाते हैं "हर बच्चे को जब उसकी मां जनती है तो शैतान (उस बच्चे को) तक्लीफ़ पहुंचाता है, मगर मरयम और उसका बेटा (ईसा अलैहि0) इससे महफ़ूज़ रहे।" **(सही अल जामेअ सग़ीर–जिल्द 4 सफ़ा –71)**

"जब कोई बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसके दोनों पहलूओं में उगंली चुभोता है, मगर ईसा (अलैहि0) इससे महफ़ूज़ रहे।" **(बुख़ारी–4548, मुस्लिम–2366)**

मरयम और उनके बेटे (ईसा अलैहि0) के बचे रहने की वजह मरयम की मां की सच्चे दिल से की गई यह दुआ थी। "मैं इसे और इसकी आने वाली नस्ल को शैतान मरदूद के फ़ित्ने से तेरी पनाह में देती हूँ।" **(आले इमरान–आयत–36) (बुखारी 3431)** अम्मार बिन यासिर रजि0 भी उन लोगों में से हैं, जिन्हें अल्लाह ने शैतान के शर से महफ़ूज़ रखा था। जैसा कि हदीस में है--कि अबुदर्दा रजि0 ने कहा कि क्या तुम में कोई ऐसा शख़्स है जिसको अल्लाह ने अपने नबी (सल्ल0) की दुआ से शैतान से महफ़ूज़ रखा हो? तो मुग़ीरा रजि0 ने कहा कि 'हां' वह अम्मार (रजि0) है। **(बुख़ारी–3743)**

(2) घरों में आग का लगना– "जब तुम लोग सोने लगो तो चिराग़ बुझा दिया करो। क्योंकि शैतान बअज़ हैवानों (चूहों वग़ैरह) को ऐसी चीज़ो की तरफ़ लाता है और तुम्हारे घरों में आग लगा देता है।" **(अबु दाऊद–5 2 4 7, अदब अल मुफ़रद–1222, मुस्लिम–5246)**

(3) शैतानी ख़्वाब– "इन्सान नींद की हालत में जो ख़्वाब देखता हे, वोह तीन तरह के होते हैं– (1) रहमानी यानि अल्लाह की तरफ़ से (2) शैतानी– जो इन्सान को परेशान व रन्जीदा करने के लिए शैतान की तरफ़ से होता है और (3) नफ़सानी–जिसमें इन्सान अपने –आप से बातें करता है।" **(सही अल जामेअ सग़ीर–जिल्द–3 सफ़ा–184)**

"अगर कोई शख़्स ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे पसन्द हो तो वह अल्लाह की तरफ़ से है। उसे चाहिये कि इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और उसे लोगों से बयान करे और अगर कोई बुरा ख़्वाब दिखे तो वह शैतान की तरफ़ से है। उस शख़्स को चाहिये कि अल्लाह की पनाह चाहे और उस ख़्वाब को किसी से बयान न करे, क्योकि उससे कोई नुक्सान नहीं पहुंचता।" **(बुख़ारी–6985, तिर्मिजी–2083)**

(4) मौत के वक़्त इन्सान को झिन्झोड़ना – नबी सल्ल0 अपनी मौत वाली बीमारी में शैतान के वसवसे से अल्लाह की पनाह मांगते और यह दुआ करते थे "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ गिर कर हलाक होने, इमारत में दबने, पानी में डूबने, आग में जलने से और मौत के वक़्त शैतान के झिझोंड़ने से और इस बात से भी कि मैं तेरी राह (जिहाद) में पीठ दिखाकर मरूं और इस बात से भी कि किसी जानवर के डसने से मेरी मौत हो।" **(सही जामेअ सग़ीर–जिल्द–1 सफ़ा–405 – नसाई)**

(5) इस्तेहाज़ा की बीमारी की वजह शैतान है–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने 'इस्तेहाज़ा' (वह खून जो हैज़ की मुकर्ररा मुद्दत ख़त्म होने के बाद भी जारी रहता है) वाली औरत से फ़रमाया "यह शैतान के कचौके की वजह से होता है।" **(अबुदाऊद–287 इब्ने माजा–622)**

(6) प्लेग (ताऊन) की बीमारी का सबब शैतान है– रसूल सल्ल0 ने फरमाय

मेरी उम्मत का खात्मा मैदाने जिहाद के नैज़ों और ताऊन की बीमारी से होगा, जो जिन्नों के कचौको का नतीजा है। दोनों हालतों में मरने वालों को शहादत का दर्जा नसीब होगा।" (सही जामेअ सगीर–जिल्द–4 सफा–90)
" ताऊन तुम्हारे दुश्मन जिन्नों के कचौके का नतीजा है, उसमें तुम्हारे लिए शहादत का दर्जा है।" (मुस्तदरक–हाकिम)

(7) **इन्सान के खाने–पीने और घर में शैतान का हिस्सा** हुजैफा रजि० बयान करते हैं कि जब हम नबी सल्ल० के साथ किसी खाने में शरीक होते तो उस वक़्त तक अपना हाथ न बढ़ाते, जब तक आप सल्ल० खाना शुरू न करते। एक दफा हम आप सल्ल० के साथ खाने में शरीक थे। तभी एक लौंडी तेजी से आई और खाने की तरफ हाथ बढ़ाने लगी आप सल्ल० ने उसका हाथ थाम लिया फिर एक देहाती तेज़ रफ़्तार से आया और खाने की तरफ हाथ बढ़ाने लगा तो नबी सल्ल० ने उसका भी हाथ पकड़ लिया। फिर आप सल्ल० ने फरमाया "खाने के वक़्त 'बिस्मिल्लाह' न कहा जाए तो शैतान उस खाने को हलाल समझता है।" **(मुस्लिम–5259, अबुदाऊद–3766)**

"अल्लाह का नाम लेकर दरवाज़ा बन्द करो तो शैतान बंद दरवाज़ा नहीं खोल सकता। मशकीज़े का मुंह बंद कर दो और उस पर अल्लाह का नाम लो, बर्तन ढांप दो, चिराग बुझा दो और अल्लाह का नाम लो।" **(मुस्लिम–5246, इब्ने माजा–3410)**

"जो बाएं हाथ से खाता है, उसके साथ शैतान खाता है और जो बाएं हाथ से पीता है, उसके साथ शैतान पीता है।" **(अहमद–)**

"जब (कोई) आदमी अपने घर में आए और घर में दाखिल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम ले ले (बिस्मिल्लाह कहे) तो शैतान (अपनी जुर्रियत से) कहता है इस घर में तुम्हारे लिए न शाम का खाना है और न रात गुज़ारने की जगह है और अगर कोई घर में घुसते वक्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लेता तो शैतान कहता है तुम्हें रात गुज़ारने के लिए जगह भी मिल गई और रात का खाना भी।" **(अबुदाऊद 3765, मुस्लिम – 5262)**

(8) आसेब ज़दगी–

इर्शादे बारी है "जो लोग सूद खाते हैं, उन का हाल उस शख़्स का सा होता है, जिसे छूकर शैतान ने बावला कर दिया हो।" **(बक़राह–आयत–275)** और रसूल सल्ल० ने फरमाया "शैतान इब्ने आदम के जिस्म में खून की तरह दौड़ता है।" **(बुखारी–)**

इब्ने तीमिया रह० कहते हैं "अइम्मा ए मुस्लिमीन में सिवाए मुअतज़िला के एक टोले के कोई भी ऐसा नहीं, जिसने यह कहा हो कि आसेब ज़दा शख़्स के जिस्म में शैतान दाख़िल नहीं होता।" **(मजमूआ फ़तावा–जिल्द–19 सफ़ा–12)**

शैतान के हथ कन्डे

शैतान अपने मकसद में कामयाब होने के लिए जो हथकन्डे अपनाता है, उनमें से कुछ खास ये है।

(1) बातिल को सजा–संवार कर पेश करता है।
(2) अल्लाह के अहकाम को बढ़ा या घटा कर पेश करता है।
(3) आज का काम कल करने पर उकसाता है, सुस्त बनाता है।
(4) झूटा वादा करता है, झूटी उम्मीदे दिलाता है।

(5) इन्सान के साथ हमदर्दी ज़ाहिर करता है।
(6) नफ़्स पर क़ब्ज़ा कर लेता है।
(7) शुकूक व शुब्हात में डालता व खौफ दिलाता है।
(8) शराब, जुए का आदी बनाता व बुत परस्ती कराता है।
(9) जादूगारी सिखाता व फ़ाल निकालने को अच्छा बताता है।
(10) औरत व दुनिया की मुहब्बत में उलझाता है।
(11) गीत–संगीत और बिदआत का आदी बनाता है।
(12) शरीअत की पाबन्दी में रोड़े अटकाता है।

शैतान से बचाव के तरीक़े

(1) एहतियात–हम शैतान के गुमराह करने के तरीक़ों को जान चुके हैं, इसलिए इस बारे में एहतियात से काम लें।

(2) कुरआन–व हदीस पर पाबन्दी से अमल–

हमें चाहिये कि इल्मी व अमली तौर पर कुरआन व हदीस की पाबन्दी करे। अल्लाह की तरफ से नाज़िल शुदा अक़ाइद को माने व सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करे। अल्लाह की हराम कर्दा चीज़ो से परहेज़ करे। फ़रमाने रसूल सल्ल0 है "जब बन्दा सज्दे की आयत की तिलावत करके सज्दा करता है तो शैतान वहां से हट कर रोने लगता है और कहता है कि हाए! नाकामी इब्ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया गया तो उसने सज्दा किया, उसके लिए जन्नत है और मुझे सज्दे का हुक्म हुआ तो मैंने ना फ़रमानी की मेंरे लिए जहन्नम है।" **(मुस्लिम– 244,इब्ने माजा–1052)**

3. अल्लाह की पनाह मांगे–

जिस शख़्स को अल्लाह की पनाह मिल जाए, शैतान उस तक नहीं पहुंच सकता इसके लिए दुआ करें कि "ऐ हमारे रब! मुझे शैतानों की छेड़–छाड से बचा कर अपनी हिफाज़त में ले ले और मुझे इससे भी बचा कि वोह मेरे क़रीब आएं।" **(मुअमिनून–आयत–97–98)** और इस तरह कि "मैं अल्लाह की जो सुनने व जानने वाला है, पनाह मांगता हूँ शैतान के वसवसे से, उसकी फूंक से और उसके जादू से।" **(इब्ने माजा–**
– अबुदाऊद – नसाई–)

बैतुलख़ला में दाखिल होते वक़्त दुआ करें कि "ऐ अल्लाह! नापाक शैतानों (जिन्नों) और जिननीयों से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ।" **अबुदाऊद– 06 – बुख़ारी– 3222 – इब्ने माजा–296)**

गुस्से के वक़्त इस तरह पनाह मांगें कि "ऐ अल्लाह! मैं सरकश शैतान से तेरी पनाह चाहता हूँ।" **(अबुदाऊद– बुख़ारी–तिर्मिजी–3200)**

ऐ अल्लाह! तेरे सिवाए कोई इबादत के लायक़ नहीं। तू हर चीज़ का मालिक व पालन हार है। मैं तेरी पनाह चाहता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से, शैतान की शरारत व शिर्क से और इस बात से कि मैं कोई गुनाह करूं।"**(तिर्मिज़ी– –सही जामेअ सग़ीर–जिल्द–6 सफ़ा–56)**

जमाअ (सोहबत) के वक़्त – कहें कि "अल्लाह के नाम से ऐ अल्लाह! हमें शैतान से बचा और जो औलाद हमें दे, शैतान को उससे दूर रख।" **(मुस्लिम–3533 – बुख़ारी –5164)** गधे की चीख़ सुनें– तो "आऊजुबिल्लाह " पढ़ कर अल्लाह की पनाह मांगें।" **(सही जामेअ सग़ीर–जिल्द–1 सफ़ा–286)**

बाल – बच्चों की हिफाज़त के लिए–कहें कि "मैं तुम्हें अल्लाह के

कामिल कलमात की पनाह में देता हूँ, हर शैतान से, ज़हरीले जानवर से और बुरी नज़र से।"(बुख़ारी–3371 – इब्ने माज़ा–3525 – तिर्मिज़ी – 1878)

सबसे बेहतर दुआ जिस के ज़रिये शैतान से अल्लाह की पनाह मांगी जाए, वोह 'सूरह फ़लक' और 'सूरह नास' हैं।" (नसाई–5431, बैहक़ी–7858)

(4) ज़िक्रे इलाही में मशग़ूलियत– यह वह सबसे बड़ा हथियार है जो बन्दे को शैतान से निजात दिला सकता है। इब्ने क़य्यिम रह0 कहते हैं कि इन्सान अल्लाह के ज़िक्र के ज़रिये अपने दुश्मन (शैतान) से महफ़ूज़ रह सकता है। शैतान गफ़लत की ही हालत में उस पर हमला करता है। **(अल वाबिल–सफ़ा–60)**

(5) शैतान की मुख़ालिफ़त – हारिस बिन कैस रह0 कहते हैं "अगर नमाज़ के दौरान शैतान तुम्हारे पास आए और कहे कि तुम रियाकारी (दिखावा) कर रहे हो तो तुम नमाज़ को और लम्बी कर दो।" **(तिलबीसे इब्लीस–सफ़ा–38)**

शैतान को जो भी चीज़ पसन्द हो, उसकी मुख़ालिफ़त करे। जैसे– शैतान बाएं हाथ से खाता है, बाएं हाथ से पीता हैं और बाएं हाथ से पकड़ता है, तो हमें चाहिये कि यह सारे काम दाएं हाथ से करें।**(मालिक–1652 – मुस्लिम–5266)**

इसी तरह फ़िज़ूल खर्ची से बचे। क्योंकि अल्लाह ने इससे मना किया है और "फ़िज़ूल खर्ची करने वालों को शैतान का भाई कहा है।" **(इस्रा–आयत–27)**

जल्द बाज़ी करने से बचें– इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया "गौर व फ़िक्र करना रहमानी सिफ़त (गुण) है और जल्द बाज़ी शैतान की सिफ़त है।" **(सही अल जामेअ– जिल्द–3 सफ़ा–57)**

जम्हाई से बचने की कोशिश करें।

इसलिए कि शैतान को इन्सान का जम्हाई लेना अच्छा लगता है क्योंकि जम्हाई सुस्ती की निशानी है और शैतान यही चाहता है कि इन्सान की कार कर्दगी और जद्दोजहद कम रहे।

(6) तौबा व अस्तग़फ़ार करें–

जब शैतान किसी को गुमराह करे तो उसे चाहिये कि फौरन अल्लाह से तौबा व अस्तग़फार करे। इसलिए कि "हक़ीक़त में जो लोग परहेज़गार हैं, उनका हाल तो यह होता है कि कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल उन्हें छू भी जाता है तो फौरन अल्लाह को याद करते हैं।" **(आराफ़–आयत–201)**

जैसा कि आदम अलैहि0 के साथ हुआ कि जब उन्होंने मना किया गया फल खा लिया तो उन दोनों (आदम व हव्वा अलैहि0) ने दुआ की कि "ऐ रब! हमने अपने आप पर जुल्म किया। अगर तू हमें माफ़ करके हम पर रहम न फ़रमाए तो हम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाएंगे।" **(आराफ़–आयत–23)**

अल्लाह से दुआ है कि वह हम पर शैतान को हावी न होने दे, हमें उसके शर व फ़रेब से बचाए, हमारी ख़ताओं से दर गुज़र करे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639, 9887239649